दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : *dnpggkp@gmail.com*
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 23.02.2026

प्रकाशनार्थ

सूक्ष्म-शिक्षण, शिक्षण कौशलों के विकास की एक प्रभावी तकनीक- डॉ. अर्जुन सोनकर

दिनांक 23.02.2026 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ पी०जी० कालेज, गोरखपुर के शिक्षक-शिक्षा (बी.एड.) विभाग में सूक्ष्म-शिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई। **प्रथम सत्र के विषय विशेषज्ञ -डॉ. अर्जुन सोनकर (सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर) रहे। इन्होने अपने व्याख्यान में सूक्ष्म-शिक्षण की अवधारणा को विस्तार से स्पष्ट करते हुए बताया कि** यह शिक्षण-कौशलों के विकास की एक प्रभावी तकनीक है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक का प्रारंभ वर्ष 1961 में अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रो. ड्वाइट विलियम एलन तथा रॉबर्ट नेल्सन बुश द्वारा किया गया था। आपने सूक्ष्म-शिक्षण को "4S" के माध्यम से समझाते हुए बताया कि पहले एस का अर्थ - Small Content (लघु विषय-वस्तु) दूसरे एस का अर्थ - Small Group (छोटा समूह) तीसरे एस का अर्थ – Short Time (संक्षिप्त अवधि) तथा चौथे एस का अर्थ -Single Skill Focus In One Time (एक समय में एक कौशल पर ध्यान) है। आपने निष्कर्ष रूप में कहा कि सूक्ष्म-शिक्षण लघु पाठ, लघु समूह, लघु अवधि एवं सहपाठी प्रतिपुष्टि के माध्यम से शिक्षक-प्रशिक्षुओं के शिक्षण प्रदर्शन को सुदृढ़ बनाता है तथा उनकी शक्तियों एवं कमजोरियों की पहचान में सहायक सिद्ध होता है। आगे आपने शिक्षण के प्रमुख कौशलों पर चर्चा करते हुए पाठ प्रस्तावना कौशल, अनुशीलन प्रश्न कौशल, उदाहरण कौशल, व्याख्या कौशल, उद्दीपन परिवर्तन कौशल, श्यामपट्ट लेखन कौशल तथा पाठ समापन कौशल तथा उसके घटकों पर विस्तार से चर्चा की एवं इनका अभ्यास कराया तथा प्रशिक्षुओं की शंकाओं का समाधान तथा जिज्ञासाओं की संतुष्टि की गई।

कार्यशाला के द्वितीय चरण में विभाग के सहायक आचार्य श्री प्रदीप कुमार यादव द्वारा पाठ प्रस्तावना कौशल एवं उसके घटकों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं अभ्यास कराया गया। अपने वक्तव्य में आपने पाठ प्रस्तावना कौशल को शिक्षण की आधारशिला बताया। आपने बताया कि छात्रों में रुचि जागृत करना, ध्यान केंद्रित करना एवं उन्हें मानसिक रूप से पाठ के लिए तैयार करना पाठ प्रस्तावना कौशल का मुख्य लक्ष्य है। आपने पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ने, तार्किक एवं क्रमबद्ध प्रश्न पूछने, अधिकतम पाँच प्रश्न रखने तथा 'हाँ-ना' वाले प्रश्नों से बचने पर विशेष बल देते हुए उद्देश्य कथन स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने और उपयुक्त शिक्षण-सहायक सामग्री के प्रयोग की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला का शुभारम्भ विशेषज्ञ वक्ता डॉ. अर्जुन सोनकर एवं विभाग के प्राध्यापकों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण तथा माँ सरस्वती की वंदना द्वारा हुआ। सरस्वती वंदना बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर की प्रशिक्षु अनुष्का, अंजलि एवं वैष्णवी द्वारा प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात विशेषज्ञ वक्ता का स्वागत प्रशिक्षु अमन शुक्ला द्वारा माल्यार्पण कर तथा प्रांजलि प्रिय एवं रोशनी द्वारा पर्यावरण संरक्षण की भावना से पौधा भेंट कर किया गया। इसके पश्चात् बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर की प्रशिक्षु प्रिया, सुधा एवं प्रज्ञा ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर की प्रशिक्षु सृष्टि यादव द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि का परिचय विभाग के सहायक आचार्य श्री प्रदीप कुमार यादव तथा आभार ज्ञापन प्रशिक्षु प्रफुल्ल कुमार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर विभाग की प्रभारी प्रो. (डॉ.) शुभ्रा श्रीवास्तव, श्री राकेश कुमार सिंह, श्री गोपाल सिंह एवं विभाग के परिचर श्री अमरनाथ चौधरी सहित बी.एड. द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

(डॉ.) शैलेष कुमार सिंह
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क